

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमास्तुमहादेशिकाय नमः

श्रीपरमहंसस्वामिब्रह्मानन्द रिरचितं  
॥ श्री रमापत्यष्टकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री रमापत्यष्टकम् ॥

जगदादिमनादिमजं पुरुषं  
शरदम्बरतुल्यतनुं रितनुम्।  
धृतकञ्जरथाङ्गदं रिगदं  
प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ 1 ॥

कमलाननकञ्जरतं रिरतं  
हृदि योगिजनैः कलितं ललितम्।  
कुजनैः सुजनैरलभं सुलभं  
प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ 2 ॥

मुनिर्बुद्धहृदिस्त्रपदं सुपदं  
निखिलाध्वरभागभुजं सुभुजम्।  
हतवासरमुख्यमदं रिमदं  
प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ 3 ॥

हतदानरदृष्टबलं सुबलं  
स्वजनान्तसमस्तमलं रिमलम्।  
समपास्त गजेन्द्रदरं सुदरं  
प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ 4 ॥

परिकल्पितसर्कलं रिक्कलं  
सकलागमगीतगुणं रिगुणम्।  
भरपाशनिराकरणं शरणं  
प्रणमामि रमाधिपतिं तमहम् ॥ 5 ॥

মৃতিজন্মজরাশমনং কমনং  
শরণাগতভীতিহরং দহরম্।  
পরিতুষ্টরমাহৃদযং সুদযং  
প্রণমামি রমাধিপতিং তমহম্ ॥ 6 ॥

সকলারনিবিস্বধরং স্বধরং  
পরিপূরিতসর্দিশং সুদৃশম্।  
গতশোকমশোককরং সুকরং  
প্রণমামি রমাধিপতিং তমহম্ ॥ 7 ॥

মথিতার্ণররাজরসং সরসং  
গ্রথিতাখিললোকহৃদং সুহৃদম্।  
প্রথিতাদ্ভুতশক্তিগণং সুগণং  
প্রণমামি রমাধিপতিং তমহম্ ॥ 8 ॥

সুখরাশিকরং ভরবন্ধহরং  
পরমাষ্টকমেতদনন্যমতিঃ।  
পঠতীহ তু যোহনিশমের নরো  
লভতে খলু রিষ্ণুপদং স পরম্ ॥ 9 ॥

॥ ইতি শ্রী রমাপত্যষ্টকং সমাপ্তম্ ॥